भजन

तर्ज–तुमसे इजहारे हाल कर बैठे

आज फुरकत का ख्वाब टूट गया,
मिल गये तुम हिजाब टूट गया
दिल रूहों के सुभान आ बैठे,
अर्श खिलवत बयां कर बैठे

1–भूल बैठे थे हम जो खजाना
याद आया वो मूल ठिकाना
मेहर नूरजमाल कर बैठे

2–है हमेशा जो माशूक अर्श में
आज बन बैठे आशिक फर्श में
काम क्या बेमिसाल कर बैठे

3–है वो महबूब मेरे मेहरबां
कह दिया हमने राज दिल का
वाणी में हवाल दे बैठे